

हैप्पी न्यू ईयर...

हैप्पी न्यू ईयर... हैप्पी न्यू ईयर... ये आया 2019। नये वर्ष की आपको बहुत बहुत बधाई। नया वर्ष आपका सफल हो, ये हम चार दिन सुनते भी रहेंगे और सुनाते भी रहेंगे। अच्छा है। पर यही चीज तो हमने दो हजार अठारह के आरंभ में भी की थी। उसपर हम दृष्टिपात करते हैं तो हमें आश्चर्य होता है कि अरे! 2018 पूरा भी हो गया। न सिर्फ पूरा ही हुआ, परंतु ये तो जैसे कि और ही हम भारी हो गए। ना हमने उस वर्ष किये संकल्प पर गौर किया, ना ही ध्यान रखा कि मैंने तो ये संकल्प किया था, पर वो तो यूं का यूं ही रह गया। आइये, हम बीते वर्ष की समीक्षा करें।

जब समीक्षा करने लगे, तो पता चला कि ये वर्ष तो कई उतराव चढ़ाव में और रोजमर्रा की जिन्दगी की आपाधापी और दौड़धूप में ही बीत गया। नया तो कुछ सोचा नहीं और ना नया कुछ हो पाया। वही की वही दिनचर्या, वही के वही लोग, वही का वही जीने का नज़रिया, और यूं ही वर्ष को खपा दिया। आइये हम देखें और याद करें कि मैंने 2018 में कौन से संकल्प किये थे। हमें तो डेस्टिनी तक पहुंचना था, और पहुंचे कहाँ?

मैंने तय किया था कि 2018 में अच्छे से पढ़ाई पढ़कर मैरिट की श्रेणी में आऊंगा, पर हुआ यूं कि दोस्तों के संग आकर उनको खुश करने में ही अपना समय यूं ही व्यर्थ गंवा दिया। या मेरा वो लक्ष्य मेरे ध्यान से हट गया और मैं बाहर की चकाचौंध में यूं ही समय को बर्बाद करता रहा। कभी पार्टियों में तो कभी खेल कूद में या कभी सिनेमा देखने में। ये सब हमने जो देखा, वो सिर्फ देखा ही नहीं, पर उसके अनुरूप अपने जीवन को भी ढाला। यानि कि हमने जो देखा, सुना, उसका चिंतन किया और वो चिंतन हमारे चित्त का हिस्सा बन गया। और जैसा चित्त वैसा ही चरित्र बनता गया। कई बार सफल भी हुआ, तो कई बार असफलताओं के मध्य जूझता रहा और न हमें अपने आप को अपडेट करने की ओर ध्यान गया। जाए भी क्यों, क्योंकि असफलता के बोझ से हम उठ ही नहीं पाये।

हाल ही में अभी हमने हैप्पी दिवाली, नवयुग के लिए दिवाली, ये सब हमने किया और करते आ रहे हैं। ये त्योहार आते हैं और हमें क्षणिक उमंग उत्साह भी देते हैं, पर सिर्फ औपचारिकताओं की पूर्ति के लिए ही हम इसपर ध्यान देते हैं। जैसे कि घर की सफाई करो, नया कपड़ा पहनो, नई डायरी खरीदो। घर में जमी हुई धूल, दीवार में लगे दाग और कोने में लगे जाले को हम साफ करते हैं। ये सब तो करते हैं, सबकुछ बदलते हैं। पर ना बदलती हमारी सोच। ये सब ऐसे चार दिन बीत जाते, फिर वही घर, वही दफ्तर, वही स्कूल, वैसा ही चलना, उठना, बस यहीं तक।

हम 2019 को भी बीते 2018 की तरह ही तो नहीं बिताना चाहेंगे ना! क्योंकि बीते 2018 वर्ष से हम पूर्णतः संतुष्ट तो नहीं हैं ना! तो 2019 के लिए कुछ नई सोच, नए उमंग के साथ प्लानिंग कर अपने जीवन जीने के तौर तरीकों में कुछ बदलाव लाने का प्रयास करेंगे। क्योंकि समय की घड़ी तो यूं ही टिक टिक करते फिर वहीं पहुंच जायेगी।

तो आइये, यदि हम अपने नये वर्ष में जीवन को उमंग, उत्साह और खुशियों से भरा बनाना चाहते हैं तो सबसे कारगर है अपने सोचने के तरीके को बदलना। तो 2019 को सफल करने के लिए एक दिन निकालकर प्लान करते हैं। स्वयं के प्रति हमारी सोच कैसी है और कैसी होनी चाहिए, इसके अंतर को देखें। हम चाहते हैं कि हम सदा खुश रहें। तो खुश रहेंगे कैसे, खुशी बनी कैसे रहेगी, इसके बारे में सोचें। सबकुछ देने से घटता है, पर एक ही चीज है जो बढ़ती है बांटने से, वो है खुशी। खुशी चाहिए तो खुशियां बांटना आरंभ करें। मैं खुश रहूँ और मेरे पास खुशियों का खजाना इतना हो जो औरों को मैं देता चलूँ। हाँ, यहां पर ध्यान रखना होगा कि हर बार इस खुशी के पैरामीटर को बनाये रखना भी एक चुनौती है। पर मैंने ठान लिया है कि मुझे हर हालत में खुश रहना है और खुशियां बांटनी है। कहते हैं ना, जो आप देंगे, वही लौटकर आयेगा। जो बोयेंगे वही पायेंगे। अब निरंतर खुशी बनी रहे, उसके लिए हमें अपनी सोच प्रणाली पर कार्य करना होगा। उसके लिए सबल और सकारात्मक सोच को बढ़ाना ही होगा। क्योंकि परिस्थितियां तो हर पल बदलती रहेंगी। लेकिन मुझे खुश रहना है, इस संकल्प पर मुझे दृढ़ रहना है। हर परिस्थिति में सकारात्मकता दृढ़ लेना, ये तरीका अपना लेना है। इसके लिए हम आपको एक विधि बताते हैं... सुबह जल्दी उठना और उठकर कम से कम पंद्रह मिनट, जो संकल्प हमने अपने आप से किये हैं, उन्हें दोहराना और अपने भीतर सबकोन्शियस तक पहुंचाना। पर यहां आप कहेंगे कि मैं तो उठ ही नहीं सकता, सुबह मेरी नींद जल्दी पूरी नहीं होती। सुबह यदि आप जल्दी उठना चाहते हैं, तो सबसे पहले जल्दी सोना आरंभ करें। सुबह उठते ही मन में बार बार ये संकल्प लायें कि मैं बहुत खुश हूँ, परमात्मा ने मुझे सबकुछ दिया है, मैं स्वस्थ हूँ, मैं सबकुछ कर सकता हूँ। परमात्मा का शुक्रिया अदा करें कि आपने मुझे इस धरा पर भेजकर सबको खुशी बांटने का जो कार्य दिया है, वो करने के मैं योग्य हूँ। इस तरह अपने सकारात्मक ऊर्जा से स्वयं को सबल बनायें। फिर आपने जो संकल्प किये हैं कि मुझे खुश रहना है, उसे फिर से दोहरायें...। ये प्रक्रिया रोज हमें करनी होगी, क्योंकि आने वाला हर दिन अलग अलग होगा। पर मुझे अपने सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ, हर दिन को सफल बनाना है। इस प्रक्रिया को अच्छी तरह से सीख लेना होगा। फिर होगा क्या? बस... आपकी खुश रहने की सोच ही आपकी नेचर बन जायेगी। आप हर हाल में खुश रहेंगे। आपका 2019 का वर्ष सफल हो और आप सदा खुश रहते हुए जीयें और आपके सम्बंधी, साथी, परिवार, समाज को खुशियां बांटें और इस वर्ष को यादगार बनायें, यही हमारी शुभ आशायें हैं। हैप्पी न्यू ईयर...



डॉ. कु. गंगाधर

सम्बंधों से न्यारे रह बाबा की याद में हमारी नेचुरल लाइफ हो

अब लगता है कि लम्बा कुछ सुनाने की जरूरत नहीं है, इसलिए न कुछ बोलूँ तो भी अच्छा है और बोलूँ तो ऐसा बोलूँ जो भूले नहीं। हमको जीना है तो ऐसा, फिर इसी स्थिति में मरना है। जब तक मरूँ ना, तब तक ऐसी स्थिति हो। इसके लिए हर एक बाबा के अनन्य बन जायें, उन जैसा अन्य कोई नहीं। तो मेरी भावना है, आप हर एक बाबा का परिचय मुख से भले नहीं दो, लेकिन किसी को भी कोई प्रकार का दुःख हो ना, तो आपको देकर चला जावे। दुःख करने की क्या बात है? ऐसे नहीं बोलो। अब अन्त मते सो गते मैंने बाबा को दिल में बिठाया है, बाबा ने मेरे को दिल में बिठाया है।

बाबा की कमाल है जो ऐसा संगठन बनाया है। तो सभी को मैं एक गिफ्ट देना चाहती हूँ, जिस गिफ्ट की लिफ्ट में बैठो और पहुँच जाओ। आजकल सीढ़ी चढ़ने में थोड़ा टाइम भी लगता है। हमारे सामने तो लिफ्ट खड़ी है सिर्फ बटन दबाओ पहुँच जाओ। इजी है ना क्योंकि समय बहुत थोड़ा है, कइयों को इसमें भी संशय होता है क्योंकि इतना साल हो गया, अभी तक विनाश आया नहीं है। हम कहती हैं अच्छा है विनाश नहीं आया है जब तक हम फरिश्ता नहीं बने हैं। हम फरिश्ता रूप बनेंगे तो विनाश इतने में हो जायेगा। साइंस वाले बड़ा अच्छा काम कर रहे हैं, इसी के आधार से सारे विश्व को मैसेज मिल रहा है। बाकी यह कोई हमारी लाइफ के लिए नहीं, सेवा के लिए है। साइलेंस वाले भी फरिश्ता बनने का काम तीव्रता से करें। तो ऐसे मिलन मनाने में पहले खुशी मेरे को है या आपको है? क्योंकि खुशी जैसी खुराक नहीं, चिंता जैसा मर्ज नहीं। खुशी मजबूत बनाती है। काम बाबा का

है तो बाबा ही चिंता करे ना, मेरा काम है खुश रहना, यह एक ही काम है और आपको खुशी देना, जो खुशी मुझे बाबा देता है। वन्दरफुल है यह भी नुमाशाम के समय योग करना, अमृतवेले तो ऐसे नहीं बैठ सकते हैं ना! दिल कहता है फिर यहाँ ही बैठके करती हूँ। मैं राय देती हूँ कभी भी कोई अमृतवेला मिस नहीं करे। अमृतवेले की महिमा बहुत है, इतना ही फिर नुमाशाम के योग की भी है। जो यह नियम अनुसार चलते हैं जैसे ज्ञान, योग, धारणा, सेवा चार सञ्जेक्ट नम्बरवार हैं।

ज्ञान कहता है देह और सम्बन्ध से न्यारे रह बाबा की याद में नेचुरल लाइफ हो। योग भी नेचुरल हो। धारणा ऐसी हो, जो बहुत मीठा हो जैसे बाबा हमेशा मुरली चलाने के पहले मीठे बच्चे कहता है। मीठे

कौन होते हैं? जो कभी भी किसी के स्वभाव वश नहीं होते हैं। आज मैं यह आप लोगों को हाथ जोड़ के कहती हूँ किसी के स्वभाव के वश होना माना बाबा जैसे मीठे बच्चे कहते हैं उनसे वंचित हो जाना है। तो हर एक अभी से संकल्प करे मीठा बनने का। यह सेवा दुआयें देने वाली है। बाबा का प्यार और परिवार की दुआयें मिलती हैं। बाबा देखता है बच्ची मीठी है, मेरा बच्चा है, मेरा नाम बाला करने के लिए अपनी घोट तो नशा चढ़े, जो बाबा सुनाता है वही मंथन करें। जितना वो मंथन करेंगे तो औरों को ऐसा बनने में इजी होगा। मुख से कुछ न बोलो। अभी ऐसा कोई प्रोग्राम बनाओ जो सारी दुनिया को बाबा कौन है, कैसा है, साक्षात्कार हो जाये। मतलब ऐसा प्रोग्राम बनाओ जो सबके दिल से निकले मेरा बाबा, जो सर्व आत्माओं का पिता है। कलियुग को खत्म करके सतयुग लाने वाला बाबा आ गया है।



दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

पुरुषार्थ में एवररेडी, तो अन्त अच्छी

बाबा का हम बच्चों से कितना प्यार है! बच्चों की जरा भी कमी देख नहीं सकता है। जिससे भी प्यार होता है, उसकी छोटी भी कोई ऐसी वैसी बात सुनेंगे तो बुरा लगेगा। आपकी नहीं है, है दूसरे की, लेकिन ऐसी बुरी लगेगी, जैसे मेरी है। तो बाबा का तो आत्मिक प्यार है, परमात्मा का प्यार है। तो बाबा ने यह विशेष प्रोग्राम बनाया कि जो भी कमजोरियां हैं, कमियां हैं, क्योंकि यह अन्तिम काल है और सबका अन्तिम काल आना ही है। फिक्स नहीं है, कभी भी किसी के पास आ सकता है। मम्मा का बहुत अच्छा एक स्लोगन था - हर घड़ी अन्तिम घड़ी समझो। तो अन्तिम घड़ी में और कुछ याद नहीं आवे, कोई देवता याद आवे, अच्छी बातें याद आवें क्योंकि अन्त मति सो गति होती है ना। एवररेडी रहेंगे तो अन्त सुहानी होगी।

बाबा की ऐसी एलर्ट रहने की नेचर थी तो बच्चों को भी एलर्ट रखता था। तो हमें भी अभी ऐसा एलर्ट रहना चाहिए क्योंकि बाबा को बिल्कुल सुस्ती अच्छी नहीं लगती थी। कैसा भी पेपर आवे, उसमें हम पास होकर दिखायें। करेंगे, देखेंगे, यह शब्द बाबा को बिल्कुल अच्छे नहीं लगते हैं। लेकिन अगर बाबा से प्यार है, वो तो सबका सौ परसेन्ट है, उसके लिए तो बाबा ने हमें सर्टीफिकेट दिया। बाकी और कोई सञ्जेक्ट में ऐसी रिजल्ट नहीं है। बाबा से प्यार है, तब तो मजबूरी से ही सही, चल रहे हैं। परंतु प्यार का रिटर्न केवल इतना ही नहीं होगा। बाकी जो सञ्जेक्ट रहे हुए हैं, उसमें भी समान तो बनना पड़ेगा ना!

बाबा कहते मुझे और कोई रिटर्न नहीं चाहिए, एक शब्द में तुम अपने को टर्न कर लो। टर्न और रिटर्न। इसमें फायदा तो हमको ही होगा, तब बाबा कहते अपने को टर्न करो, इसमें दूसरे को नहीं देखना होता है क्योंकि अपने को बचाने के लिए, अपनी गलती दूसरे पर रखेंगे। दूसरे को देखके करने से दूर की नज़र तेज़ हो जाती है। फिर दूसरे की गलती सहज दिखाई देती है तो कहते हैं ये तो यह भी करते हैं इसलिए सब चलता है, होता है। अब चलेगा तो सही क्योंकि सब नम्बरवार हैं, लेकिन मेरे को क्या देखना है? तो जो दूसरों को ज्यादा देखते हैं, उन्हीं के आधार पर जो अपनी गलती भी उनके ऊपर छोड़ने की कोशिश करते हैं, वो आलसी और अलबेले हो जाते हैं। मैंने किया, अन्दर समझ रहे हैं, लेकिन

बाहर से सिद्ध जो करेंगे वो यह कहेंगे यह हुआ ना, यह किया ना, इसलिए हुआ। यही तो पेपर है ना, हमारे सामने छोटी छोटी बातों के माध्यम से पेपर आते हैं। जहाँ भी जायेंगे वहाँ पेपर आयेंगे जरूर, कोई न कोई रूप चेंज होकर। इसलिए खुद को बदलो, बदलके औरों को बदलो, इसके लिए बदलना है ज्ञान और योग के हिसाब से न कि सेन्टर के हिसाब से। तो यह थोड़ी हिम्मत रखो। थोड़ी सी बात हुई तो क्या करें, कैसे करें, वेस्ट थॉट शुरू होते हैं। बाबा ने कहा किसकी फालतू बातें गन्दी बातें सुनना यह भी वास्तव में पाप है, क्योंकि हमने अपना टाइम तो वेस्ट किया। सुनने से कुछ न कुछ बात याद आती है इसलिए बाबा कहते युक्ति से अपने को टालने की कोशिश करो।



दादी हृदयमोहिनी, अति. मुख्य प्रशासिका

समर्पित, अर्थात् सर्वश त्यागी

यह संगमयुग पुरुषोत्तम युग है। इसे चढ़ती कला का, वरदानी युग भी कहते हैं। इस युग में आप सबको समर्पित होने का भाग्य मिला है। यह भाग्य भी कोटों में कोई, कोई में भी कोई को मिलता है। तो हमें आप समर्पित पाण्डवों को देख बहुत बहुत खुशी होती है। हमारे दिल की आश है कि आप सब ऐसी भट्टी करो जो बाबा की आशायें पूरी हों। हम सबकी एक आश है कि हम बाबा को प्रत्यक्ष करें, यह आश अभी तक पूरी नहीं हो रही है, क्यों? हमारी आश है कि हमारे यज्ञ के जो भी पाण्डव हैं, वह ऐसा करके दिखायें जो वानप्रस्थी हो, वानप्रस्थी माना युवा नहीं। वानप्रस्थियों की बुद्धि में रहता है कि कभी भी पंछी उड़ जाए, हम तैयार हैं। तो हमारी आश है कि एक एक पाण्डव ऐसा अपना बैलेन्स शीट

क्लीयर करें- जो धर्मराज भी फूलों से स्वागत करके, सलाम करके वतन में भेजे। सभी बाबा के ज्ञानी तू आत्मा बच्चे अपना बैलेन्स शीट ऐसा बनाओ जो धर्मराज दिल से खातिरी करे। यह नहीं कि देख तुमने यह गलती किया, यह तू भोग ,तो यह सब यहाँ खत्म करके जाओ। क्या यह पॉसिबल है? हमारा रिमार्क है कि अंत में बाबा बाहें पसार कर कहे आओ बच्चे आओ, ऐसे गले लगाकर वतन में भेज दे, ऐसी स्थिति बनानी है। दिल कहे सौ प्रतिशत हमारा यह रिपोर्ट हो। बाबा की श्रीमत अनुसार हमारे मन-वचन-कर्म हों। बाबा हमें सर्टीफिकेट दे कि यह संस्कारों से, संकल्पों से, दृष्टि, वृत्ति सभी से पास विद ऑनर है। ऐसी कमाल करो तब कहेंगे समर्पित। ऐसी कमाल नहीं किया तो समर्पित क्या हुआ!



दादी प्रकाशमणि, पूर्व मुख्य प्रशासिका